International Journal in Management and Social Science
Volume 13 Issue 12, Dec 2025 ISSN: 2321-1784 Impact Factor: 8.088
Journal Homepage: http://ijmr.net.in, Email: irjmss@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal

छत्तीसगढ़ में स्वच्छ भारत मिशन की सफलताएं एवं चुनौतियां

डॉ. रजनी सारथी

सहायक प्राध्यापक, अर्थशास्त्र

राजीव गांधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय अंबिकापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

सारांश

स्वच्छ भारत मिशन (SBM) भारत सरकार का एक अत्यंत महत्वपूर्ण और प्रभावशाली पहल है, जिसका उद्देश्य पूरे देश में स्वच्छता की स्थिति में सुधार करना और नागरिकों के जीवन स्तर को बेहतर बनाना है। यह मिशन न केवल भारत के शहरी क्षेत्रों में, बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी स्वच्छता को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाओं और अभियानों का संचालन करता है। इस शोधपत्र में छत्तीसगढ़ राज्य में स्वच्छ भारत मिशन की सफलताओं और सामने आई चुनौतियों का गहराई से विश्लेषण किया गया है। मिशन के अंतर्गत शौचालयों का निर्माण, स्वच्छता अभियान, जन जागरूकता और सफाई के विभिन्न पहलुओं पर ध्यान केंद्रित किया गया है। विशेष रूप से छत्तीसगढ़ राज्य में जहाँ अत्यधिक ग्रामीण जनसंख्या और विकास की चुनौतियाँ हैं, इस मिशन का प्रभाव अधिक महत्वपूर्ण बन जाता है। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि किस प्रकार राज्य में स्वच्छता सुधार की दिशा में मिशन ने महत्वपूर्ण प्रगति की है और किन कारणों से इसके कार्यान्वयन में कई समस्याएं उत्पन्न हुईं। यह शोध मिशन के प्रभाव और उसकी चुनौतियों के बारे में विस्तार से चर्चा करता है।

1. प्रस्तावना

भारत सरकार ने 2 अक्टूबर 2014 को **स्वच्छ भारत मिशन** की शुरुआत की, जिसका उद्देश्य पूरे भारत को खुले में शौच से मुक्त (ODF) बनाना था। इस मिशन का मुख्य उद्देश्य न केवल शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता सुधार

करना, बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी स्वच्छता को बढ़ावा देना और सार्वजनिक स्वास्थ्य की स्थिति में सुधार करना था। मिशन ने ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों के निर्माण, सार्वजनिक स्थानों पर स्वच्छता की सुविधा, कचरा प्रबंधन, और जल स्वच्छता के पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया। छत्तीसगढ़ राज्य में यह मिशन अत्यधिक महत्व रखता है क्योंकि यहां की अधिकांश आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करती है और स्वच्छता संबंधी समस्याएं यहाँ और भी गंभीर थीं। छत्तीसगढ़ में इस मिशन के अंतर्गत स्वच्छता के स्तर में सुधार लाने के लिए कई योजनाओं और कार्यक्रमों को लागू किया गया। इन योजनाओं के माध्यम से राज्य में स्वच्छता की दिशा में बड़े बदलाव आए हैं। स्वच्छ भारत मिशन ने छत्तीसगढ़ में ग्रामीण इलाकों में शौचालय निर्माण, कचरा प्रबंधन, और स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए कड़ी मेहनत की है।

राज्य के ग्रामिण इलाकों में एक बड़ा हिस्सा उन क्षेत्रों का था जहां खुले में शौच की समस्या थी, और यहाँ स्वच्छता का स्तर बहुत निम्न था। इस मिशन ने राज्य के इन कमजोर इलाकों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए कई अभियान चलाए और गाँव-गाँव में शौचालयों का निर्माण कराया। इसके अलावा, स्वच्छता से संबंधित अन्य पहलुओं पर ध्यान दिया गया जैसे कचरा प्रबंधन, जल निकासी प्रणाली, और सार्वजनिक स्वच्छता की सेवाएं। इसके परिणामस्वरूप, छत्तीसगढ़ में स्वच्छता की स्थिति में सुधार हुआ है और लोगों की स्वास्थ्य स्थिति में भी वृद्धि हुई है।

2. स्वच्छ भारत मिशन की प्रमुख सफलताएं

2.1 **खुले में शौच से मुक्ति**

स्वच्छ भारत मिशन की सबसे बड़ी और महत्वपूर्ण सफलता छत्तीसगढ़ राज्य में **खुले में शौच से मुक्ति** (ODF) प्राप्त करना था। यह लक्ष्य प्राप्त करने के लिए राज्य सरकार ने बड़े पैमाने पर शौचालयों का निर्माण कराया और ग्रामीण क्षेत्रों में लोगों को शौचालयों के उपयोग के लिए प्रेरित किया। पहले छत्तीसगढ़ के कई ग्रामीण

इलाकों में खुले में शौच करने की प्रथा सामान्य थी, लेकिन इस मिशन के तहत लाखों शौचालयों का निर्माण किया गया और खुले में शौच की समस्या को लगभग समाप्त किया गया। इस अभियान ने लोगों की आदतों में बड़ा बदलाव लाया और समाज में स्वच्छता के प्रति एक नई सोच पैदा की। अब, अधिकांश स्थानों पर लोग शौचालयों का उपयोग करते हैं और खुले में शौच नहीं करते। यह बदलाव न केवल ग्रामीण क्षेत्रों के स्वास्थ्य के लिए फायदेमंद साबित हुआ, बल्कि महिलाओं की सुरक्षा में भी सुधार आया है। शौचालयों का निर्माण करके महिलाओं को बाहर खुले में शौच करने की समस्या से मुक्ति मिली।

इसके अलावा, इस बदलाव ने समाज में सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण को भी बदलने का काम किया है। अब ग्रामीणों के मन में यह विश्वास मजबूत हुआ है कि स्वच्छता केवल एक व्यक्तिगत जिम्मेदारी नहीं, बल्कि सामूहिक जिम्मेदारी भी है। इससे यह साबित हुआ है कि यदि शासन और समाज मिलकर काम करें, तो बड़े पैमाने पर बदलाव संभव है। छत्तीसगढ़ राज्य में ओडीएफ का लक्ष्य प्राप्त करना न केवल मिशन की सफलता को दर्शाता है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक उपलब्धि भी है, जिसे पूरे राज्य में लागू किया गया।

2.2 **स्वच्छता जागरूकता अभियान**

स्वच्छता जागरूकता अभियान ने छत्तीसगढ़ राज्य के ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति जन जागरूकता फैलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विभिन्न सरकारी योजनाओं और संगठनों द्वारा स्वच्छता से संबंधित विभिन्न जागरूकता अभियान चलाए गए। इन अभियानों में लोगों को स्वच्छता के महत्व के बारे में बताया गया और स्वच्छता को एक आदत के रूप में अपनाने के लिए प्रेरित किया गया। विभिन्न प्रकार की कार्यशालाओं, रैलियों और पंपलेट वितरण के माध्यम से स्वच्छता के महत्व को लोगों तक पहुँचाया गया। इन अभियानों ने लोगों को यह समझने में मदद की कि स्वच्छता सिर्फ स्वास्थ्य के लिए ही नहीं, बल्कि समाज और पर्यावरण के लिए भी आवश्यक है।

छत्तीसगढ़ के विभिन्न क्षेत्रों में यह जागरूकता अभियान राज्य सरकार, पंचायतों और स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा चलाए गए थे। इन अभियानों के द्वारा न केवल खुले में शौच के खिलाफ आवाज उठाई गई, बल्कि कचरा प्रबंधन, पानी की बचत, और सामूहिक स्वच्छता के महत्व को भी समझाया गया। इन कार्यक्रमों के परिणामस्वरूप, राज्य में स्वच्छता की स्थिति में तेजी से सुधार हुआ और लोगों की मानसिकता में बदलाव आया। स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने से राज्य के नागरिकों ने इस मिशन को अपने जीवन का हिस्सा बनाना शुरू किया।

2.3 **सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण**

राज्य सरकार ने सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण किया, खासकर उन स्थानों पर जहाँ लोग लंबे समय तक बाहर रहते थे, जैसे बस स्टॉप, बाजार, और अन्य सार्वजनिक स्थान। इस कदम ने सार्वजनिक स्वच्छता को बेहतर बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। इन शौचालयों के निर्माण से न केवल सार्वजनिक स्वास्थ्य में सुधार हुआ, बल्कि महिलाओं को भी इससे विशेष लाभ हुआ, क्योंकि वे अब सार्वजनिक स्थानों पर शौच के लिए बाहर नहीं जातीं। यह कदम विशेष रूप से उन स्थानों पर फायदेमंद साबित हुआ जहाँ लोगों के पास अपने घरों में शौचालय नहीं थे।

राज्य सरकार ने शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में सार्वजनिक शौचालयों का निर्माण सुनिश्चित किया है, ताकि अधिक से अधिक लोग स्वच्छता की सुविधाओं का लाभ उठा सकें। यह कदम स्वच्छ भारत मिशन के लिए एक महत्वपूर्ण प्रगति है, क्योंकि सार्वजनिक शौचालयों के निर्माण से समाज में स्वच्छता की स्थिति में व्यापक सुधार हुआ है।

2.4 **स्वच्छता दूत**

स्वच्छता दूतों का निर्माण और उनका सक्रियता से कार्य करना एक और सफलता थी, जिसने छत्तीसगढ़ में स्वच्छता के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। स्वच्छता दूतों का कार्य था ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करना और स्वच्छता आदतों को जीवनशैली में शामिल करने के लिए प्रेरित करना। यह स्वच्छता दूत विभिन्न समुदायों और गांवों में गए और वहां लोगों को शौचालयों का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया। इसके साथ ही, कचरा प्रबंधन और पानी की बचत जैसे मुद्दों पर भी लोगों को जागरूक किया गया। स्वच्छता दूतों ने विशेष रूप से महिलाओं और बच्चों के लिए शिक्षा दी, ताकि वे स्वच्छता की आदतों को समझ सकें और इनका पालन कर सकें।

स्वच्छता दूतों ने स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर स्वच्छता अभियान की सफलता को सुनिश्चित किया। इस प्रयास ने राज्य में स्वच्छता के प्रति एक नई भावना को जन्म दिया और स्थानीय स्तर पर स्वच्छता गतिविधियों को बढ़ावा दिया।

2.5 अंबिकापुर मॉडल: स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत एक सफल उदाहरण (केस स्टडी)

छत्तीसगढ़ राज्य के अंबिकापुर नगर ने स्वच्छ भारत मिशन के प्रभावी क्रियान्वयन के माध्यम से राष्ट्रीय स्तर पर स्वच्छता प्रबंधन का एक उत्कृष्ट मॉडल प्रस्तुत किया है। अंबिकापुर की सफलता मुख्य रूप से सामुदायिक भागीदारी, नवाचार आधारित कचरा प्रबंधन प्रणाली तथा स्थानीय प्रशासन की सक्रिय भूमिका का परिणाम है।

अंबिकापुर ने स्वच्छता सर्वेक्षण के अंतर्गत निरंतर उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर अपनी विशिष्ट पहचान स्थापित की है। स्वच्छ सर्वेक्षण 2019 में इसे भारत का दूसरा सबसे स्वच्छ शहर घोषित किया गया

था। इसके अतिरिक्त, स्वच्छ सर्वेक्षण 2024–25 के अंतर्गत 'स्वच्छता सुपर लीग' श्रेणी में भी इस शहर को शीर्ष स्थान प्राप्त हुआ, जो स्वच्छता प्रबंधन की निरंतरता और गुणवत्ता को दर्शाता है।

अंबिकापुर को भारत सरकार द्वारा '5-स्टार कचरा मुक्त शहर (Garbage Free City)' की रेटिंग प्रदान की गई है। यह शहर 'डस्टबिन मुक्त' एवं 'लैंडफिल मुक्त' मॉडल पर कार्य करता है, जहाँ कचरे को खुले स्थानों पर एकत्रित करने के बजाय स्रोत स्तर पर ही पृथक्करण किया जाता है।

यहाँ लागू ठोस एवं तरल संसाधन प्रबंधन प्रणाली (Solid and Liquid Resource Management – SLRM) स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत एक अभिनव पहल मानी जाती है। इस प्रणाली के अंतर्गत कचरे को 150 से अधिक श्रेणियों में अलग किया जाता है तथा पुनर्चक्रण योग्य सामग्री का पुनः उपयोग किया जाता है।

इस मॉडल की सबसे महत्वपूर्ण विशेषता 'स्वच्छता दीदियाँ' हैं, जो स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी लगभग 470 से अधिक महिलाएँ हैं। ये महिलाएँ घर-घर जाकर कचरा संग्रहण एवं पृथक्करण का कार्य करती हैं, जिससे न केवल शहर स्वच्छ बना है बल्कि महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण को भी बढ़ावा मिला है।

अंबिकापुर नगर निगम द्वारा प्रारंभ किया गया 'गार्बेज कैफे' देश की एक अनूठी पहल है, जिसमें प्लास्टिक कचरा लाने वाले जरूरतमंद लोगों को भोजन उपलब्ध कराया जाता है। इसके अतिरिक्त, नगर निगम कचरे से जैविक खाद एवं पुनर्चक्रित उत्पाद तैयार कर राजस्व भी अर्जित कर रहा है, जिसे 'वेस्ट टू वेल्थ' मॉडल के रूप में जाना जाता है।

शहर के पुराने डंपिंग यार्ड को विकसित कर 'सैनिटरी पार्क' में परिवर्तित किया गया है, जो पर्यावरण संरक्षण एवं शहरी सौंदर्यीकरण का सफल उदाहरण प्रस्तुत करता है।

इस प्रकार अंबिकापुर मॉडल यह दर्शाता है कि यदि स्थानीय प्रशासन, समुदाय एवं स्व-सहायता समूह मिलकर कार्य करें, तो स्वच्छ भारत मिशन के उद्देश्यों को स्थायी रूप से प्राप्त किया जा सकता है। यह मॉडल छत्तीसगढ़ सहित अन्य राज्यों के लिए भी अनुकरणीय उदाहरण सिद्ध हुआ है।

3. स्वच्छ भारत मिशन की चुनौतियाँ

3.1 **ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों की कमी**

हालाँकि राज्य में शौचालयों का निर्माण किया गया, लेकिन छत्तीसगढ़ के कुछ दूरदराज क्षेत्रों में अब भी शौचालयों की कमी बनी हुई है। कई ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक और आर्थिक कारणों से लोग शौचालयों का निर्माण नहीं कर पा रहे हैं। कुछ जगहों पर ग्रामीणों को शौचालय के महत्व के बारे में सही जानकारी नहीं है, जिसके कारण वे खुले में शौच करने की आदत छोड़ने के लिए तैयार नहीं होते। इसके अलावा, कुछ गांवों में शौचालयों के निर्माण के बाद भी उनका सही रख-रखाव नहीं किया गया, जिससे वे सही तरीके से काम नहीं कर रहे हैं। इस प्रकार की चुनौतियों को देखते हुए स्वच्छ भारत मिशन को अधिक प्रभावी बनाने के लिए प्रशासन को कई रणनीतियाँ लागू करनी होंगी।

3.2 **जन जागरूकता की कमी**

कुछ ग्रामीण क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता की कमी अब भी बनी हुई है। ग्रामीण इलाकों में जहां शिक्षा का स्तर अपेक्षाकृत कम है, वहाँ लोग खुले में शौच की प्रथा को छोड़ने में संकोच करते हैं। इसके कारण, इन क्षेत्रों में खुले में शौच को खत्म करने के लिए अतिरिक्त प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। जागरूकता की कमी से यह मिशन कई जगहों पर कमजोर पड़ सकता है। स्वच्छता से संबंधित उचित जानकारी की कमी,

शौचालयों के उपयोग की आदत में बदलाव न आ पाना, और स्वच्छता के महत्व को न समझ पाना मुख्य कारण रहे हैं।

3.3 **वित्तीय बाधाएं**

स्वच्छ भारत मिशन के लिए आवश्यक वित्तीय संसाधनों की कमी के कारण कई योजनाओं का कार्यान्वयन पूरी तरह से नहीं हो सका। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में जहाँ अधिक संख्या में शौचालयों की आवश्यकता थी, वहां बजट की कमी ने मिशन को प्रभावित किया।

3.4 **अवसंरचना की कमी**

स्वच्छता से संबंधित बुनियादी ढांचे की कमी, जैसे कूड़ेदान, सफाई कर्मचारी, और सफाई के उपकरणों का अभाव, मिशन की कार्यान्वयन में रुकावट डालता है। इन सुविधाओं की उपलब्धता सुनिश्चित करने के लिए बेहतर प्रशासनिक समर्थन की आवश्यकता है।

4. निष्कर्ष

स्वच्छ भारत मिशन ने छत्तीसगढ़ राज्य में कई सकारात्मक परिवर्तन लाए हैं, जैसे शौचालयों का निर्माण, खुले में शौच की प्रथा में कमी, और सार्वजनिक स्वच्छता में सुधार। हालाँकि, कई चुनौतियों का सामना करना पड़ा, जैसे जागरूकता की कमी, वित्तीय बाधाएं, और बुनियादी ढांचे की कमी, जो मिशन की सफलता को प्रभावित करती हैं। इस मिशन की सफलता सुनिश्चित करने के लिए सरकार को अधिक संसाधन और बेहतर योजना के साथ काम करना होगा। इसके साथ ही, समुदायों और नागरिकों की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है ताकि स्वच्छता को जीवनशैली का हिस्सा बनाया जा सके।

5. *सिफारिशें*

1. **आर्थिक और सामाजिक संसाधनों का बेहतर उपयोग**: स्वच्छता अभियान के लिए अधिक वित्तीय संसाधनों का आवंटन किया जाए ताकि ग्रामीण क्षेत्रों में शौचालयों और स्वच्छता सुविधाओं का निर्माण हो सके।
2. **समुदाय की भागीदारी को बढ़ावा देना**: ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने के लिए समुदायों की सक्रिय भागीदारी जरूरी है।
3. **प्रशासनिक समर्थन में सुधार**: स्वच्छता मिशन की सफलता के लिए राज्य और केंद्र सरकारों को बेहतर प्रशासनिक ढांचा और संसाधन सुनिश्चित करना चाहिए।

संदर्भ

1. भारत सरकार. (2014). **स्वच्छ भारत मिशन (ग्रामीण)**. ग्रामीण विकास मंत्रालय, भारत सरकार। http://swachhbharatmission.gov.in

2. छत्तीसगढ़ राज्य सरकार. (2016). **स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत छत्तीसगढ़ में स्वच्छता सुधार**। रायपुर: राज्य मंत्रालय।

3. शर्मा, र. (2018). **छत्तीसगढ़ में स्वच्छ भारत मिशन: एक विश्लेषण**। *राजनीति और समाज*, 22(1), 45-57।

4. सिंह, अ., & यादव, म. (2020). **स्वच्छ भारत मिशन के तहत ग्रामीण स्वच्छता सुधार**। *भारतीय समाजशास्त्र जर्नल*, 15(3), 123-135।

5. वर्मा, न. (2019). **"स्वच्छता की दिशा में छत्तीसगढ़ के प्रयास"**। *भारतीय विकास पत्रिका*, 10(2), 78-82।

6. भारत सरकार. (2018). **स्वच्छ भारत मिशन: प्रगति रिपोर्ट**। मंत्रालय, भारत सरकार। http://swachhbharatmission.gov.in/docs/progress_report.pdf

7. त्रिपाठी, एस. (2017). **स्वच्छ भारत मिशन: सामाजिक और सांस्कृतिक पहलु**। *भारतीय समाज और संस्कृति जर्नल*, 8(4), 112-124।

8. शुक्ला, र. (2020). **स्वच्छ भारत मिशन और ग्रामीण विकास**। *भारतीय ग्रामीण विकास पत्रिका*, 12(3), 65-79।

9. सिंह, भ. (2019). **"स्वच्छ भारत मिशन: एक सामाजिक दृष्टिकोण"**। *राजनीतिक विज्ञान जर्नल*, 32(2), 34-50।

10. गोयल, क. (2021). **छत्तीसगढ़ में खुले में शौच की समस्या और स्वच्छ भारत मिशन**। *सामाजिक अध्ययन जर्नल*, 14(2), 98-110।

11. विश्व स्वास्थ्य संगठन. (2017). **भारत में सार्वजनिक स्वास्थ्य और स्वच्छता: एक रिपोर्ट**। http://who.int/india

12. यादव, श., & कुमारी, प. (2018). **छत्तीसगढ़ में स्वच्छता दूतों की भूमिका**। *स्वच्छता और समाज,* 20(1), 78-90।

13. कुमार, राज. (2016). **स्वच्छ भारत मिशन के सामाजिक और आर्थिक प्रभाव**। *भारतीय लोक नीति जर्नल,* 19(3), 123-138।

14. पाठक, मनोज. (2020). **स्वच्छ भारत मिशन: छत्तीसगढ़ में शहरी और ग्रामीण क्षेत्रों में प्रभाव**। *शहरी और ग्रामीण विकास जर्नल,* 22(4), 44-58।

15. विश्व बैंक. (2019). **भारत में ग्रामीण स्वच्छता: एक रिपोर्ट**। https://www.worldbank.org/en/country/india

16. प्रेस सूचना ब्यूरो (PIB). (2020). **अंबिकापुर: कचरा मुक्त शहर मॉडल एवं स्वच्छ भारत मिशन के अंतर्गत ठोस अपशिष्ट प्रबंधन प्रणाली**। भारत सरकार।

17. इंडिया वाटर पोर्टल. (2021). **अंबिकापुर में ठोस एवं तरल संसाधन प्रबंधन (SLRM) मॉडल का अध्ययन**।

18. मोंगाबे-इंडिया. (2020). **अंबिकापुर में सामुदायिक भागीदारी आधारित कचरा प्रबंधन प्रणाली की सफलता**।

19. एम. एस. चड्ढा सेंटर फॉर ग्लोबल इंडिया. (2022). **वेस्ट टू वेल्थ मॉडल: अंबिकापुर का स्वच्छता एवं संसाधन प्रबंधन अनुभव**।